मन्त्र-जाल से चाची सास को चोदा-8

“वो सिर्फ़ पेटीकोट और ब्लाउज में और मैं पज़ामे में था। हम दोनों खड़े थे.. फिर मैं खड़े-खड़े ही उसके पीछे गया और पीछे से उसे अपनी बाँहों में समा लिया और उसके गले को चुम्बन करने लगा। ...”

Story By: (raj-hot)
Posted: Tuesday, April 14th, 2015
Categories: चाची की चुदाई
Online version: मन्त्र-जाल से चाची सास को चोदा-8

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

मन्त्र-जाल से चाची सास को चोदा-8

मैं करीब 10 मिनट तक उन्हें चुम्बन करता रहा और करीब आधे घंटे तक हम दोनों एक-दूसरे के शरीर को चूमते रहे।
वो कह रही थी- राज.. आपने मुझे बहुत तड़फाया है।
मैं भी उन्हें सेक्सी अंदाज़ में जवाब दे रहा था- प्रिया.. तूने भी मुझे बहुत तड़फाया है.. जबसे मैंने तुम्हें देखा है तब से कोई दिन ऐसा नहीं गया होगा कि मैंने तुम्हें ख्बावों में ना चोदा हो..

मेरे मुँह से ये सुनकर वो भी अपने चेहरे पर कामुकता लाकर बोलीं- राज.. मैं भी कब से आपके पास चुदवाना चाहती थी.. लेकिन बदनामी से डर रही थी। यह भगवान की मर्ज़ी ही है कि मेरी चूत और आपके लण्ड को.. ज्योति की वजह से एक-दूसरे को मिलने का मौका मिला है और ये मौका मैं गंवाना नहीं चाहती हूँ।

फिर मैंने उसकी साड़ी निकाल दी और उसने भी मेरी शेरवानी निकाल दी।
अब वो सिर्फ़ पेटीकोट और ब्लाउज में और मैं पज़ामे में था।
हम दोनों खड़े थे.. फिर मैं खड़े-खड़े ही उसके पीछे गया और पीछे से उसे अपनी बाँहों में समा लिया और उसके गले को चुम्बन करने लगा।

मेरे दोनों हाथ उसकी दोनों चूचियों पर थे.. मेरे हाथ का स्पर्श पाते ही उसकी चूचियां थोड़ी सख़्त हो गईं।

फिर मैंने अपने दोनों हाथों की पहली दो-दो ऊँगलियों के बीच में उनके निप्पल को पकड़ लिया और ऊँगलियों से मसलने लगा।

वो पूरी तरह से गर्म हो चुकी थीं.. इसलिए वो अपना दाहिना हाथ पीछे लाईं और मेरे लण्ड को पज़ामे के ऊपर से ही पकड़ कर सहलाने लगीं, बोलीं- ऊओह.. राज आपका लण्ड कितना बड़ा है.. एक बार अपने मुँह में लेने के बाद भी.. अभी ऐसा अहसास हो रहा है कि पहली बार ही आपके लण्ड को छू रही हूँ..।

मैंने अपने दोनों हाथों को फैला कर उनकी दोनों चूचियों पर रख दिए और धीरे-धीरे दबाने लगा और वो भी अपने दोनों हाथों को पीछे लाकर मेरे लण्ड को और तेज़ी से सहलाने लगीं।

मैं धीरे-धीरे उनके ब्लाउज के हुक खोलने लगा और सारे हुक खोल कर उनका ब्लाउज निकाल दिया। फिर मैं अपना हाथ उनके पेटीकोट पर ले गया और पेटीकोट के नाड़े को अपने हाथ में लिया.. तभी सासूजी ने भी मेरे पज़ामे का नाड़ा पकड़ लिया और हम दोनों ने एक साथ एक-दूसरे के नाड़े खींच दिए।

ऐसा लगा कि किसी दुकान का फीता काट कर उदघाटन हुआ हो।
हम दोनों ही हँस पड़े.. और इसी के साथ हम दोनों सिर्फ़ चड्डियों में रह गए थे।

मैंने थोड़ा पीछे होकर उसकी ब्रा के भी हुक खोल दिए।
फिर मैंने अपने लण्ड को सैट करके उनकी गाण्ड के छेद में लगा करके उनसे चिपक गया।
वो भी अपनी गाण्ड का दबाव मेरे लण्ड पर बढ़ा रही थीं।

मैं उनकी दोनों नंगी चूचियों पर अपना हाथ रख कर उन्हें दबाने लगा। उनके मस्त मम्मे दबाते-दबाते मैं अपना हाथ नीचे ले गया और उनकी चूत पर रख दिया।

तब सासूजी ने एक लंबी साँस ली और अपने दोनों पैरों के बीच में मेरे हाथ को ज़ोर से दबा लिया।

मैं अपना एक हाथ उनकी चूत पर और एक हाथ उनकी चूचियों पर रख कर करीब 10 मिनट तक दबाता रहा।
सासूजी ने भी अपने दोनों हाथों को पीछे लाकर.. मेरे लण्ड को दबाना चालू कर दिया।

मुझे लगा कि अगर ऐसे ही चलता रहा तो शायद हम दोनों ही झड़ जाएँगे। इसलिए मैं दूर हट गया और सासूजी को उठा कर बिस्तर पर लिटा दिया।

अब हम पूरी तरह से नंगे हो चुके थे। फिर मैं अपना मुँह सासूजी के पैरों के पास ले गया और उनके पैरों को चूमने लगा और चूमते-चूमते उनकी जाँघों तक आ गया। मैं उनकी दोनों मुलायम जाँघों को बारी-बारी से चूमता रहा।
सासूजी भी छटपटा रही थीं और अपने दोनों पैरों को ऊपर-नीचे कर रही थी।

फिर मैं 69 की अवस्था में आ गया और अपने दोनों पैरों को फैला कर उनके सर को बीच में ले लिया। अब मैंने उनकी दोनों जाँघों को पकड़ कर उनकी चूत को थोड़ा सा ऊपर किया और उनकी चूत पर जीभ को रख दिया।

जीभ के चूत पर पाते ही सासूजी का पूरा शरीर कांप उठा और सासूजी ने मेरे दोनों पैरों को पकड़ लिए, मैंने ऊँगली से सासूजी की चूत को थोड़ा फैलाया और उनकी चूत में जीभ को अन्दर तक डाल दी।

अब उनसे बर्दाश्त नहीं हुआ तो सासूजी ने भी एक हाथ से मेरे लण्ड को पकड़ कर अपने मुँह में ले लिया लेकिन मेरा लण्ड इतना मोटा और लंबा था कि सासूजी के मुँह में समा नहीं रहा था फिर भी सासूजी मेरे लण्ड को तेज़ी से अपने मुँह में अन्दर-बाहर कर रही थीं वे मुझसे चुदासी हो कर कह रही थीं- ऊऊहह राज्जजज.. अब्ब्ब.. सहहन.. नहीं होता.. प्प्ल्ल्लीज..

करीब 5 मिनट तक सासूजी मेरे लण्ड को और मैं उनकी चूत को अपनी-अपनी जीभ से चोदते रहे।

फिर मैं उठा और सासूजी के दोनों पाँवों को फैला कर बैठ गया, सासूजी समझ चुकी थीं कि अब उनकी सूनी चूत को लण्ड का स्वाद चखने को मिलेगा।

तब मैंने तकिया लिया और उनकी गाण्ड के नीचे रख दिया जिसकी वजह से उनकी चूत थोड़ी ऊपर आई और सासूजी की चूत का दाना मेरे लण्ड को दावत देने लगा, मैं लण्ड को हाथ में पकड़ कर सासूजी के चूत के दाने पर रगड़ने लगा.. तब वो पूरी तरह से लण्ड लेने को बेताब हो चुकी थीं, वो अपनी गाण्ड को उठा-उठा कर मेरे लण्ड को चूत में अन्दर लेने की कोशिश कर रही थीं।

फिर मैंने लण्ड के सुपारे को सासूजी की चूत के छेद पर रखा और एक हल्का सा धक्का दिया.. तो मेरे लण्ड का सुपारा उनकी चूत में चला गया।

‘आह्ह!’

सासूजी ने मेरे पूरे लण्ड को अपनी चूत में लेने के लिए फिर से गाण्ड उठाई.. लेकिन मैं जान-बूझकर थोड़ा ऊपर हो गया। जिसकी वजह से सासूजी की लवड़ा निगलने की कोशिश नाकाम हो गई, अब वो मुझसे बड़े प्यार भरे अंदाज़ में बोलीं- राज.. आप मुझे और मेरी चूत को इतना क्यों तड़पा रहे हो?

मैं भी थोड़ी शरारती मुस्कुराहट लाया और वापिस उनकी चूत के छेद पर मेरा लण्ड सटा दिया और एक करारा धक्का दिया, मेरा आधा लण्ड उनकी चूत में घुसता चला गया.. तब सासूजी ने मेरे पैरों को अपने पैरों से जकड़ लिया और अपनी गाण्ड ऊपर को उठा कर एक झटका मारा तो मेरा बचा हुआ आधा लण्ड भी उनकी चूत में समा गया।

लौड़ा चूत में खाते ही सासूजी मुझसे ‘उईईइ माँ…’ करते हुए लिपट गईं। करीब 2 मिनट तक हम वैसे ही चिपक कर पड़े रहे।

फिर मैं अपने दोनों हाथों के बल उठा और लण्ड को सासूजी की चूत से सुपारे तक बाहर निकाला और फिर एक करारी ठाप मार कर पूरा लण्ड सासूजी की चूत में फिर से पेल दिया।

अब सासूजी के मुँह से हल्की सी चीख निकल गई- उउइईईई माँआआ..
उनकी आँखों से पानी निकल गया।

मैंने सासूजी से ‘सॉरी’ बोला.. तो सासूजी ने मुझसे कहा- राज.. ये तो खुशी के आंसू हैं.. ऐसी सुहागरात तो मैंने पहली बार भी नहीं मनाई थी। आज सही मायने में मुझे लगता है कि मेरी सुहागरात है।

वे मेरे होंठों पर अपने होंठ रख कर मुझे गहरे चूमने लगीं।

फिर कुछ देर चूत को चोदने के बाद मैं उठा और सासूजी को डॉगी स्टाइल में किया और पीछे से उनकी चूत के छेद पर लण्ड का सुपारा रखा और उनकी कमर को पकड़ कर एक करारा झटका मार दिया तो मेरा पूरा लण्ड उनकी चूत में घुसता चला गया।

मैं धीरे-धीरे रफ़्तार बढ़ाता रहा और लण्ड को चूत के अन्दर-बाहर करता रहा।

सासूजी को भी इस स्टाइल में चुदवाना अच्छा लग रहा था.. इसलिए जब भी मैं लण्ड आगे की ओर करके आधा जाने देता तब वो भी अपनी गाण्ड को पीछे करके बाकी का आधा लण्ड को चूत में घुसेड़वा लेती थीं।

करीब 5 मिनट तक उस स्टाइल में चोदने के बाद मुझे लगा कि शायद हम दोनों झड़ जाएंगे.. इसलिए मैंने लण्ड को बाहर खींच लिया।

अब मैंने सासूजी को बिस्तर पर सीधा लिटा दिया और मैं उनके ऊपर आ गया।
अब तक वो इतनी चुदासी और मदहोश हो चुकी थीं कि उन्होंने मेरे लण्ड को अपने हाथ में पकड़ कर खुद ही अपनी चूत के मुहाने पर रख लिया।

चूत गीली होने की वजह से लण्ड तुरंत अन्दर घुसता चला गया, लौड़े के चूत में अन्दर घुसते ही मैंने सासूजी की धकापेल चुदाई स्टार्ट कर दी।

उन्हें मुझसे चुदते हुए करीब 25 मिनट हो चुके थे.. लेकिन हम दोनों में से कोई भी झड़ने का नाम नहीं ले रहा था।

दोस्तो, आप सोच रहे होंगे कि मैं क्या बकवास कर रहा हूँ.. कितने भी चुदक्कड़ क्यों ना हों.. वो 10 मिनट में झड़ ही जाएगा..
आप बिल्कुल सही सोच रहे हो लेकिन…
जब भी मुझे ऐसा लगता कि अब मैं झड़ने वाला हूँ.. तब मैं चुदाई रोक देता था और इधर-उधर की बातें करने लगता था। इसलिए अभी तक हम दोनों झड़े नहीं थे और सासूजी भी यही सब सोच रही थीं..

मैंने अपना एक हाथ उनके सर के नीचे ले गया और अपने होंठों को उनके होंठों पर रख कर वापिस चोदने लगा। वो भी मेरा पूरी तरह से साथ दे रही थीं।
करीब 5-6 मिनट के बाद हम दोनों हाँफने लगे थे.. लेकिन मैंने अपनी रफ़्तार और बढ़ा दी। पूरा लण्ड बाहर निकाल कर एक ही झटके में अन्दर तक ठेल देता था।

वो हाँफते-हाँफते बोल रही थीं- राज्ज.. और.. जोर.. सस्सीए.. आअज्जज मेरी..ई.. चूत.. का.. कचूमर बना दो.. ओह्ह.. मैं आअप्प्प्पक्कीए राण्ड…हूँ.. फाड़ दो मेरी चूत.. आह्ह.. अभी 2 मिनट ही और हुए होंगे कि वो बोलीं- ओऊऊहह.. म्म्म.ईएर्र्ररी.. राआज्ज्ज्ज.. मैं गई…

वो अकड़ गईं और उनका झरना बहने की कगार पर आ पहुँचा।

अब मैं भी झड़ने की कगार पर आ चुका था, इसलिए मैंने 2-3 बड़े-बड़े झटके मारे और हम-दोनों एक साथ झड़ गए।
सासूजी मुझसे लिपट गईं करीब 10 मिनट तक हम वैसे ही पड़े रहे, फिर हम दोनों उठ कर साथ में नहाने चले गए।

उस रात सासूजी को मैंने सुबह 6 बजे तक 5 बार चोदा, अब वो इतनी खुश थीं कि खुशी उनके चेहरे पर झलक रही थी।

दो दिन बाद ज्योति भी वपिस आ गई, मैंने उनके पति को पहले ही फोन कर दिया था.. इसलिए ज्योति का पति और उनकी सास भी उसे वापिस ससुराल ले गईं।

अब सब बहुत खुश थे.. जाते समय ज्योति की आँख भर आई और वो मुझसे बोलीं- जीजाजी आप माँ का ख्याल रखिएगा।

करीब 3 महीने तक मैं और सासूजी पति-पत्नी की तरह रहे। मैं रोज उनकी चुदाई करता रहा।
कुछ दिनों बाद मेरी पत्नी भी आ गई, मैंने सासूजी के घर के करीब एक फ्लैट भी ले लिया, अब मैं वहाँ अपनी फैमिली के साथ रहता हूँ.. लेकिन आज भी कोई ना कोई बहाना करके अक्सर सासूजी को चोदने चला जाता हूँ।

दोस्तो, यह थी मेरी कहानी.. आप अपने विचारों से मुझे अवगत करने के लिए मुझे ईमेल ज़रूर करना।

Other stories you may be interested in

सात दिन की गर्लफ्रेंड की चुदाई

नमस्कार दोस्तो … मेरा नाम प्रकाश है. मैं 30 साल का हूँ. मैं मुंबई के पास कल्याण जिले में रहता हूँ. अभी फिलहाल एक प्राइवेट कंपनी में जॉब कर रहा हूँ. मैं आज तक बहुत सी लड़कियों के साथ सेक्स […]
Full Story >>>

मुंबईकर का मूसल

प्रिय गुरु जी, मैं आपसे कट्टी हूँ। मैंने तीन महीने से आपको कोई कहानी नहीं भेजी तो भी आपको मेरी याद नहीं आई। आपको तो बस लेखिकायें ही अच्छी लगती हैं। पता है आपको मेरे पास रोज कई मेल आती […]
Full Story >>>

भाई बहनों की चुदक्कड़ टोली-4

कहानी के पिछले भाग में आपने पढ़ा कि मेरी बड़ी दीदी हेतल ने मेरी छोटी बहन मानसी के सामने मेरी जवानी करतूतों की सारी पोथी खोल कर रख दी थी. मगर मुझे अब किसी बात का डर नहीं था क्योंकि […]
Full Story >>>

पांच सहेलियाँ अन्तरंग हो गयी

दोस्तो, आज बहुत दिनों बाद आपसे कुछ यादें शेयर करना चाहता हूँ. मेरी पिछली कहानी थी शादीशुदा लड़की का कुंवारी सहेली से प्यार आज की मेरी कहानी देहरादून में बन रहे पॉवर प्रोजेक्ट के इंजीनियरों की है. ये पांच इंजीनियर […]
Full Story >>>

यार से मिलन की चाह में तीन लंड खा लिए-5

पिछले भाग में आपने पढ़ा कि लॉज का मैनेजर मेरी चूत को पेल रहा था और जीजा सामने कुर्सी पर बैठे हुए अपना लंड हिला रहे थे. लॉज के नौकर ने मेरे मुंह में लंड दे रखा था. जीजा को […]
Full Story >>>